श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान - रोहतास महिला कालेज सासाराम
वर्ग - बी०ए० पार्ट - III (प्रतिष्ठा)
पत्र संख्या - VI ; यूनिट नं० - 03

प्रमुख राजनीतिक चिंतक - डा० ब्रजकिशोर झा
दिनांक - 27-05-2020

प्रश्न :- कौटिल्य के सप्तांग सिद्धान्त का शेष भाग -

(4) **दुर्ग** :- राज्य का चौथा तत्व दुर्ग है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की सुरक्षा के लिए सुदृढ़ दुर्ग अति आवश्यक है। जनपद में स्थान-स्थान पर दुर्गों का निर्माण किया जाना चाहिए। जिससे शत्रुओं के आक्रमण से राज्य की रक्षा सम्भव हो सके। कौटिल्य के अनुसार दुर्ग चार प्रकार के होते हैं - औदक दुर्ग, पर्वत दुर्ग, धान्वन दुर्ग एवं वन दुर्ग।
जल से घिरे किसी स्वाभाविक टापू या गहरी खुदी हुई खाई से परिवेष्टित स्थान को औदक दुर्ग कहा जाता है। बड़ी-बड़ी चट्टानों, पर्वत श्रेणियों एवं कंदराओं से घिरा दुर्ग पर्वत दुर्ग कहलाता है। जल तथा घास आदि से हीन ऊसर प्रदेश में बना हुआ दुर्ग धान्वन दुर्ग माना जाता है। यह ऐसे मरुस्थलीय प्रदेश में बना होता है। वहाँ तक पहुँचना शत्रु के लिए कठिन होता है। बीहड़ जंगलों एवं काँटेदार झाड़ियों से परिवेष्टित दुर्ग वन दुर्ग कहलाता है। आपत्ति के समय भागकर राजा इन दुर्गों की शरण लेकर आत्मरक्षा करता है।

(5) **कोष** :- राज्य का पाँचवा प्रमुख तत्व कोष है। राज्य की कार्य-क्षमता, प्रगति एवं उन्नति कोष पर निर्भर करती है। अर्थशास्त्र में धन या अर्थ ही प्रधान वस्तु है। अर्थ धर्म और काम का भी आधार है। राज्य के प्रत्येक कार्य के लिए धन आवश्यक है। कोष के द्वारा ही सेना का भरण-पोषण किया जा सकता है एवं सैनिकों को सन्तुष्ट कर राजा उनकी भक्ति और श्रद्धा को पा सकता है। अतः एवं कोष राज्य का एक महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। कोष में प्रचुर सोना-चाँदी, बहुमूल्य रत्नादि एवं नकद सिक्कों का रहना आवश्यक है। कौटिल्य ने यह भी कहा है कि कोष का संग्रह धर्मपूर्वक एवं न्याय-संगत विधि से होना चाहिए।

Scanned by CamScanner

⑥ **दंड :-** दंड राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। दंड का (Page-02) अर्थ सेना है। इसके अन्तर्गत हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल से चतुरंगिणी सेना आती है। सेना राज्य की सुरक्षा का प्रमुख साधन है। सेना में वंशक्रम के अनुसार लोगों की भर्ती होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, जिनके पिता, पितामह आदि सेना में रहे हैं, उन्हीं लोगों को सैनिक बनाना चाहिए। ऐसा होने से सेना निपुण और दक्ष होती है। कौटिल्य ने यह भी कहा है कि सेना में अधिकांशतः क्षत्रिय को ही लिया जाना चाहिए। क्योंकि वे वीर, निर्भीक एवं युद्धविद्या में निपुण होता है।

सैनिकों को स्वामिभक्त होना चाहिए वहीं दूसरी तरफ राजा को भी सैनिकों का सुख सुविधा पर ध्यान देना चाहिए। ऐसा करने से युद्ध के समय सैनिक डटकर शत्रु का सामना करते हैं।

⑦ **मित्र :-** कौटिल्य के अनुसार राज्य की उन्नति के लिए तथा आपत्ति के समय राज्य की सहायता के लिए मित्रों की आवश्यकता होती है। अतः राजा का यह कर्तव्य होता है कि वह ऐसे व्यक्तियों से मित्रता करे जो समय पर उसकी सहायता करें। कौटिल्य के अनुसार मित्र ऐसे हों जो पितृ-पितामह के क्रम से चले आ रहे हों। मित्रों का कुलीन, बुद्धियुक्त, महान एवं अवसर के अनुसार उपयोगी होना भी आवश्यक है।

इस प्रकार कौटिल्य का मत है कि इन सातों तत्वों या प्रकृतियों या अंगों में से सभी का सुदृढ़ एवं स्वस्थ होना आवश्यक है। इन सभी अंगों के सहयोग से ही राज्य का संचालन सुचारु रूप से होता है। यदि वे आपस में उदासीन रहकर एक दूसरे की सहायता न करें, तो राज्य के लिए बहुत बड़ी व्याधि उत्पन्न हो सकती है।

अतएव निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि कौटिल्य का सप्तांग सिद्धान्त आधुनिक राज्य के लिए भी सर्वांग-प्रतीत होता है। इतना ही नहीं, राज्य जैसी अमूर्त धारणा को स्वरूप, निश्चित और मूर्त करने में कौटिल्य जितना सफल रहा है उतना आधुनिक चिंतक भी नहीं हुए हैं, क्योंकि आधुनिक काल में अबतक राज्य की 140 से अधिक परिभाषाएँ दी जाती हैं एवं किसी भी एक परिभाषा पर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। The End.

Scanned by CamScanner